REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'सलाम' कहानी संग्रह का भाषाशिल्प

प्रा. डॉ. गजानन पोलेनवार
हिंदी विभाग प्रमुख , तायवाडे महाविद्यालय, महादूला कोराडी, नागपूर.

शिल्प किसी साहित्यिक कृति के गठन पक्ष से संबधित तत्व है । कोई रचना साहित्यिक विधा के किस रुप मे प्रकट हुई है, उसका यह रुप ही शिल्प है । रचनाकार की अनुभूतियॉ कलात्मक रुप में अभिव्यक्त होने के लिए भाषा का सहारा लेती है । भाषा ही शिल्प को मूर्त रुप प्रदान करती है । रचनाकार की विशिष्ट अनुभूतियॉ कभी काव्य रुप में, कभी कथा रुप में, तो कभी नाटय रुप में प्रकट होती है । उनका ऐसे किसी रुप में प्रकट होना ही उनका शिल्प बन जाता है ।

भाषाशिल्प से तात्पर्य है, भाषा और शिल्प । साहित्य का भवन भाषा के माध्यम से खडा होता है । पाठक प्रथम रचनाकार के भाषा से परिचित होता है । रचनाकार की अनुभूतियॉ भाषा के माध्यम से साकार होती है । यहॉ भाषा माध्यम है और अनुभूतियों का साकार होना मतलब भाषा के माध्यम से निश्चित शिल्प मे ढल पाठकों के सामने कृति रुप में प्रकट होना है । अनूभूतियों के प्रकटीकरण के लिए भाषा और शिल्प दोनों आवश्यक तत्व है । इसलिए यहॉ 'भाषाशिल्प' शब्द का प्रयोग किया है ।

'शिल्प' यह आपने आप में एक विस्तृत संकलपना है । शिल्प का संबंध उन समस्त कलाओं से है जिसमें कलाकार अपने भावों, विचारों, अनुभूतियों को कलात्मक रुप में अभिव्यक्त करता है । वे माध्यम चित्रकला, मूतिकला, स्थापत्यकला, काव्यकला आदि हो सकते है । काव्यकला से तात्पर्य साहित्य से है । यहॉ शिल्प संकल्पना को साहित्य के संदर्भ में देखना अपेक्षित है ।

प्रत्येक साहित्य कृति भाषा के माध्यम से विशिष्ट रचनात्मक रुप लेकर अभिव्यक्त होती है । साहित्य कृति के रचनात्मक रुप का संबंध शिल्प से है । साहित्य कृति के शिल्प का अध्ययन करने के लिए शिल्प के अर्थ, संकल्पना, स्वरुप को समझना आवश्यक है ।

• शिल्प की परिभाषा :—

परिभाषा में किसी संकल्पना के स्वरुप, गुण, वैशिष्टय का विवेचन किया जाता है । जिससे उस संकल्पना के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हो सके । इसलिए किसी संकल्पना को उसके मूल रुप में समझने के लिए उसकी परिभाषाओं को जानना आवश्यक है ।

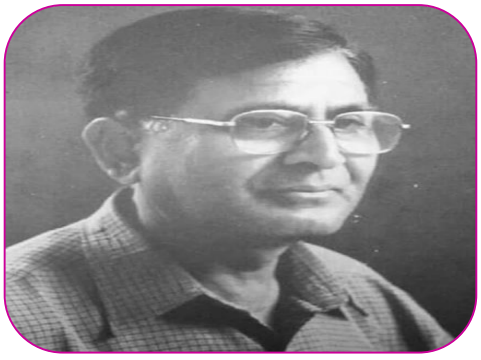

•डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल :

''शिल्प विधि कला के विभिन्न तत्वों अथवा उपकरणों की योजना का वह विधान है, वह ढंग है जिससे कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाती है ।''[१]

•नरनारायण राय

''शिल्प है अभिव्यक्ति का कौशल । अपनी बात को अधिक—से—अधिक प्रभावशाली रुप में संप्रेषित करने के लिए जो विधियॉ अपनाई जाती है, वह है टेकनीक, वही है शिल्प विधान ।''[२]

•डॉ. सुरेंद्र उपाध्याय :

''शिल्प से तात्पर्य किसी वस्तु को गढना या रुपायति करना है किंतु यह नितांत समुची कृति के अंतर्भाव का बाहय रुपाकार है, वह वस्तु की नाटकीय ढंग से संपूर्ण उपस्थिति है ।''[३]

अर्थात कलाकार द्वारा अपने भावों को मूर्त रुप प्रदान करने के लिए जिन उपादानों का प्रयोग किया जाता है, उन समस्त उपादानों द्वारा उन भावों की जो मूर्त प्रतिमा बनती है, वह प्रतिमा ही उस कलाकार का शिल्प है जैसे कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास । नाटक को नाटक और कविता को कविता कहने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है वे समस्त तत्व शिल्प में समाहित होते है ।

डॉ. हरदयाल के अनुसार ''जब हम शिल्प की बात करते है, तब हम लगभग हर चीज की बात करते हैं क्योंकि शिल्प हीवह साधन है जिसके माध्यम से लेखक का अनुभव जो कि विषयवस्तु है, उसे अपने और ध्यान देने के लिए विविश करता है । शिल्प एकमात्र साधन है जिसके द्वारा वह अपने विषय को खोजता है, उसकी छानबिन करता है, उसका विकास करता है, जिसके माध्यम से वह उस अर्थ को संप्रेषित करता है और अंतत: उसका मूल्यांकन करता है ।''[४] शिल्प एक रचना प्रक्रिया है । शिल्प से साहित्यकार के दृष्टिकोण, भाव सौंदर्य, वस्तु विस्तार, चरित्र—चित्रण, संवाद, वातावरण, शैली, जीवन दर्शन, भाषिक प्रयुक्ति, संगठन तत्व आदि से पाठक का साक्षात्कार होता है ।

किसी कृति के शिल्प के बारे में अध्ययन करने से तात्पर्य है उस कृति में प्रयुक्त भाषिक रुप और अभिव्यक्ति शैली का अध्ययन करना । भाषा साधन है जिसमें वाक्यगत प्रयोग, शब्दगत प्रयोग तथा प्रतीक, बिंब, अलंकार, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का अंतर्भाव होता है तो शैली अभिव्यक्ति पक्ष की विशिष्टता है । साहित्य के क्षेत्र मे शिल्प का अर्थ है — भावों, विचारों के अनुरुप भाषा एवं शैली के माध्यम से कथ्य की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति ।

'सलाम' कहानी संग्रह का भाषिक पक्ष :

भाषा मानवीय भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । मानव विकास और उसके समाजशील प्राणी होने का प्रमुख कारण भी भाषा ही है । साहित्यिक भाषा आम बोलचाल की भाषा से अपना अलग स्थान रखती है । लेखक, कवि की अपनी भाषिक क्षमता होती है जो उसके रचना को प्रभावपूर्ण एवं पठनीय बनाती है तथा उस रचनाकार को अन्य रचनाकारों से विशेष स्थान का अधिकारी बनाती है । भाव या विचारों से पहले पाठक के सामने भाषिक रुप ही आता है । अगर रचनाकार की भाषा सहज, सरल, ओजपूर्ण, संप्रेषणीय तथा आकर्षक हो तो पाठक उस कृति को पढना चाहेगा । तब कही जाकर वह रचनाकार के भावों, विचारों से रु—ब—रु हो पायेगा ।

'सलाम' काहनी संग्रह दलित जीवन की विभिन्न स्थितियों को उजागर करता है । उसकी भाषा समाज के मानव भाषा के मानदंडो से अलग अपने परिवेश और समाज का प्रतिनिधित्व करती है । 'सलाम' संग्रह की भाषा को निम्न तीन रुपों में व्यक्त किया है —

१. 'सलाम' कहानी संग्रह की भाषिक विशेषताएँ
२. वाक्यगत प्रयोग
३. शब्दगत प्रयोग

'सलाम' कहानी संग्रह की भाषिक विशेषताएँ

पात्रानुकूलता :

'सलाम' संग्रह की कहानियों में वाल्मीकि ने पात्रों की मनोदशा, सामाजिक स्थिति, परिवेश तथा उसका भाषिक संपर्क आदि के अनुरुप भाषा का प्रयोग किया है । उनके पात्र भाषा के कारण सजीव प्रतीत होने लगते है । पात्रों की भाषा इतनी सहज, सरल एवं नाटकीय है कि पाठक को अपने मनोदशा में खिंच लाते है ।

पात्रों की भाषा से उनके परिवेश की शब्दावली और उनके भाषिक लहजे की जानकारी होती है । उनकी भाषा में पात्रों की मनोदशा के अनुकूल बेचैनी है, छटपटाहट है, गाली, लाचारी अशुध्दता है — ''देखो, बरखुदार, तुम मेहनती लडके हो, ईमानदार हो । काम करते हो तो मै पैसे देता हूँ । न तुम मुझ पर एहसान करते हो, न मैं तुम पर । उससे आगे मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं ।''[५] यह कथन उदयोगपति ऐजाज साहब का है जिसमें व्यवहारिकता साफ झलकती है ।

''ओ, सहरी जनखे हम तेरे भाई हैं ? साले जबान सिंभाल के बोल, गॉड में डंडा डाल के उलट दूँगा । जाके जुम्मन चूहडे से रिश्ता बणा ।''[६] इस कथन में गाली है, रौब है जो कहने वाले के सामाजिक स्थिति का अंदाजा दिलाता है । साथ ही इस कथन में क्षेत्रियता का पूट भी है । सुनने वाले की दयनीता तथा गॉव की सवर्ण मानसिकता को उजागर करता है । बणा, तिकड, म्हारे, सिंभाल शब्द पात्र के क्षेत्रियता से परिचित कराते है ।

भाषिक रुपाधिक्यता :

रुपाधिक्यता से तात्पर्य भाषा रुपों की विविधता से है । ओमप्रकाश वाल्मीकि ने एक कहानी में भी भाषा के अनेक रुपों का प्रयोग किया है । पात्रों की शिक्षा, सामाजिक स्थिति के अनुसार 'अंधड' कहानी में तीन भाषा रुपों का प्रयोग किया है ।

शुध्द खडीबोली का प्रयोग :

मि. लाल और पत्नी सविता के बीच वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है — ''मै जिस गंदगी से तुम्हे बाहर निकालना चाहता हूँ...तुम लौट—लौटकर उसी में जाना चाहती हो । तुम वहॉ जाओगी तो वे भी यहॉ आएँगे । ...''[७]

अंग्रेजी भाषा का प्रयोग

मि. लाल और बेटी पिंकी के वार्तालाप में जो शिक्षित है तथा दिल्ली में रहते हैं— ''डैड, वी आर ऑल्सो गोइंग विद यू...।''[८]

अशुध्द खडीबोली (छोटे नगरों में प्रयुक्त)

मि. लाल और उनके एक परिचित के बातचित में प्रयुक्त — ''अरे, सुक्कड, तु.....तू तो बदल ही गया । सूणा है बहौत बडा आपीसर बण गिया है ....कितनी तनख्वाह मिल जावे है ?''[९] इन भाषिक रुपों के अतिरिक्त अन्य कहानियों में भी भाषा रुपों की विविधता पाई जाती है —

ग्रामीण बोली :

''अबे ज्यादा अकिल ना दिखावे...गिरेहण कोई महाजन थोडे ही है जो टेम—बे—टेम आके खडा हो जागा दरवाजो पे....पंडत यूँ बी तो कह रिया ताकि गिरेहण का टेम होवे है.....टेम पे ही तो राहु—केतु आवैंगे चॉद कू मारने....''[१०]

इसप्रकार सलाम कहानी संग्रह में एकाधिक भाषिक रुप प्रयुक्त हुए हैं जो 'सलाम' संग्रह की भाषिक विशेषता है । इस रुपाधिकता के कारण ही कहानियों की विश्वासाहार्यता, स्वाभाविकता, प्रमाणिकता तथा वातावरण की सहजता अक्षुण्ण रही है ।

संवाद योजना :

संवाद छोटे—छोटे और भावानुकूल है । वाल्मीकि ने संवादो की सटीक योजना की है । संवादों में पात्रानुकूल भाषा तथा भाषिक रुपाधिक्यता ने संवाद—योजना के सौंदर्य में की है । संवादों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है । उनके संवादों की प्रमुख विशेषता है आधे वाक्य जो पात्रों के मनोभावों को सटीक पकडते है । पात्रों की हकलाहट, बेचैनी, गुस्सा, तिरस्कार संवादों के माध्यम से व्यक्त हुआ है । खानाबदोश कहानी के सुबेसिंह और जसदेव के बीच के संवाद ऐसे है, जिसमें नाटकीयता तथा पात्रों की मनोदशा का चित्रण है —

''तुझे किसने बुलाया है ?''
''जी.....जो भी काम हो बताइए....मै कर दूँगा .....'' जसदेव ने विनम्रता से कहा ।
''क्यों ?.....तू उसका खसम है.....या उसकी (.....) पर चर्बी चढ गई है''
''बाबूजी.....आप किस तरह बोल रहे हैं.....''
''साले.....भट्टे की आग में झोंक दूँगा....किसी को पता भी नही चलेगा । हड्डियाँ तक नही मिलेगी राख से...समझा ।''[११]

अलंकारिकता :

अलंकार भाषा के शोभा बढाने वाले तत्व है । कलाकार अपनी अभिव्यक्ति को आम बोलचाल की अपेक्षा अलंकारों की सहायता से संदुरतम बनाने में गौरव का अनुभव करता है । अलंकृत भाषा कलापक्ष की एक विशेषता है । रचनाकार अलंकारों के माध्यम से भाषा को विशिष्ट और नूतन रुप प्रदान करता है । अलंकार मात्र सजावट न होकर भाव बोधन में सहायक तत्व है । अलंकारों की सहायता से भाषा में चमत्कार, रोचकता आ जाती है ।

सलाम संग्रह की कहानियों में अलंकारिक भाषा का प्रयोग कई स्थलों पर हुआ है, जिससे भाषा अधिक प्रभावशाली बनी है तथा अभिव्यक्ति में सहजता आई है ।

१) ''दुल्हन को ऐसे सहेजकर रखता है, जैसे कोई बेशकीमती हिरा अचानक उसकी झोली में आ गिरा हो ।''[१२]
२) ''सभी की ऑखो में शंकाओं के गहरे बादल घिर आए थे ।''[१३]
३) ''पुलिया पर बैठे काले और भूरे की चिंताएँ सॉझ की तरह गहरी हो गई थी''[१४]

लाक्षणिकता :

लाक्षणिकता का संबंध लक्षणा शब्दशक्ति से है । अर्थात ऐसी उक्ति जो अपने अभिधार्थ को गौण कर किसी अन्य प्रमुख अर्थ को व्यंजित करती है । इस भाषा के माध्यम से जटील तथा संश्निष्ट भावों के अभिव्यक्ति में सहायता होती है । लाक्षणिकता के कारण भाषा रोचक, आकर्षक तथा व्यंजक बनती है ।

'सलाम' कहानी संग्रह दलित जीवन केयथार्थ को अभिव्यक्त करता है । वह बिना किसी लाग–लपेट के यथार्थ को सामने लाता है । इसके बावजूद कई ऐसे स्थल है जहॉ लाक्षणिक भाषा का प्रयोग हुआ है । जिनावर, सपना, कुचक्र, ग्रहण आदि कहानियों में लाक्षणिकता के उदाहरण देखे जा सकते है–

१) ''.....औरत है तो औरत बणके रहे ।''[१५]
२) ''चंद्रमा ग्रहण से उबकर पूर्णता की और बढ रहा था ।''[१६] इस उदाहरण में मात्र चंद्र की ग्रहण से मुक्ति की बात नही की है । यहॉ बहू के बॉझपन से मुक्ति की और ध्यानाकर्षित किया है ।

संप्रेषणीयता :

लेखक, कवि, भाषा के माध्यम से जिन भावों, विचारों को व्यक्त करता है, उन भावों, विचारों को पाठक द्वारा उसी रुप में ग्रहण किया जाना, समझना संप्रेषण है और भाषा का यह गुण संप्रेषणीयता है । रचनाकार की सारी उठा–पटक इसी संप्रेषणीयता के लिए होती है । अपनी अभिव्यक्ति को पाठक तक प्रभावी रुप में पहुँचाने के लिए ही विभिन्न साहित्यिक उपादानों का प्रयोग किया जाता है । संप्रेषणीयता ही किसी कृति और रचनाकार का मुख्य उद्देश होता है ।

'सलाम' संग्रह में प्रयुक्त भाषा संप्रेषणीयता के गुणों से परिपूर्ण है । इसमें प्रयुक्त भाषिक रुपाधिक्यता, अलंकारिकता, लाक्षणिकता, लोकोक्ति–मुहावरे आदि का प्रयोग पाठकों के लिए सहज ग्राहय तथा सुरुचिपूर्ण है । हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार पूरे संग्रह में लेखक द्वारा छोटे–छोटे, सरल वाक्यों का प्रयोग किया जाना भी उनकी भाषा को संप्रेषणीय बनाता है । घटनाओं के वर्णन में सूक्ष्मता, पात्रों का

मनोवैज्ञानिक चित्रण, संवादों की सहजता और स्वाभाविकता, लेखक की अभिव्यक्ति शैली तथा दलित जीवन के यथार्थ चित्रण (भाव, भाषा एवं स्थिती) के कारण भाषा संप्रेषणीय बनी है ।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते है तथा अपने भावों को व्यक्त करते है । ''भाषा शब्द ''भाष'' धातु से बना है, जिसका अर्थ है — बोलना या कहना ।''[१७] अर्थात भाषा का मूल रुप मौखिक है । लिखित भाषा लिपिबध्द हो वाचक के संमुख आ जाती है और अर्थबोध कराती है । लिखित या मौखिक दोनों ही भाषाओं की अपनी विशिष्ट संरचना होती है । शब्दों का निश्चित क्रम में तथा लिंग, वचन पुरुष का विशिष्ट स्थिति में आना ही भाषिक संरचना है ।

लेखक अपने भावों, विचारों को लिपिबध्द करना चाहता है । इसके लिए वह भाषा के निश्चित संरचना का प्रयोग करता है, जो कि रुढ है । भाषा की सहज इकाई वाक्य है । वाक्यों के सहारे ही भावों को प्रकट किया जाता है । रचनाकार अपने भावाभिव्यक्ति में विभिन्न प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करता है । कभी वह छोटे—छोटे वाक्यों में अपने विचार पिरोता है तो कभी बडे वाक्य गढता है । कभी वह प्रश्नार्थक, निषेधवाचक वाक्यों का प्रयोग करता है तो कभी विस्यायदिबोधक वाक्यों का । भाषा की सृजन क्षमता और लेखक की कल्पना शक्ति अनंत है, उसके भाषा प्रयोग में भी यह दिखाई देता है । 'सलाम' संग्रह का वाक्यगत विश्लेषण निम्न प्रकार —

वाक्यगत प्रयोग :

ऐसा सार्थक शब्द— समूह जो संरचनागत क्रम में हो तथा पूर्ण अर्थ बतला सके वाक्य कहलाता है । यह शब्द समूह सार्थक और व्याकरण के नियमानुसार होता है । व्याकरणिक व्यवस्था के अनुसार उसमें सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, निकटता, पदक्रम तथा अन्वय आदि गुण समाहित होते है । वाक्य भाषा का सहज सार्थक रुप है, जिसके द्वारा प्रयोक्ता अपने भाव — विचार प्रकट करता है । भाषविदों ने रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर, प्रमुखता—गौणता के आधार पर वाक्यों के कई भेद किए हैं जो एक—दूसरे से रचना और अर्थाभिव्यक्ति में विशेष होते है । एक रचना में ऐसे अनेक प्रकार के वाक्यों का प्रयोग रचनाकार करता है । यह प्रयोगधर्मिता ही रचना तथा रचनाकार की भाषिक विशेषता होती है ।

'सलाम' कहानी संग्रह में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने विभिन्न वाक्य प्रकारों का प्रयोग किया है । उनमें से कुछ महत्वपूर्ण वाक्य प्रकार निम्नप्रकार—

सरल वाक्य :

जिन वाक्यों में एक कर्ता और एक मुख्य क्रिया हो उसे सरल वाक्य कहते है । आम बोलचाल तथा साहित्य में भी अधिकतर सरल वाक्यों का ही प्रयोग होता है । हिंदी की प्रकृति ही सरल और लघु वाक्य रचना की है ।वाल्मीकि ने 'सलाम' संग्रह में अधिकतर सरल वाक्यों का ही प्रयोग किया है । सरल वाक्यों के कारण भाषिक संप्रेषण में कसावट तथा सुगढता आई है । छोटे—छोटे वाक्यों के कारण भाव ग्रहण में शीघ्रता आती है और पाठक अधिक सक्रियता एवं सरसता का अनुभव करता है—

१) कुएँ के पास खंडते पर फिसलन थी । (बैल की बात, पृ. ३२)
२) निशिकांत कमरे से बाहर निकल गया था । (कुचक्र, पृ. १०५)
३) अपने काम से काम रखो । (खानाबदोश, पृ. १३०)

संयुक्त वाक्य :

जहॉ दो या दो से अधिक उपवाक्यों में से कोई भी प्रधान अथवा आश्रित न हो तथा उन वाक्यों को समुच्चय बोधक अव्यय द्वारा जोडा गया हो तब उस वाक्य को संयुक्त वाक्य कहा जाता है । इस वाक्य प्रकार में वाक्यों को जोडने के लिए और, या, अथवा, इसलिए, आदि अव्ययों को प्रयुक्त किया जाता है ।

१) मारने से पहले उसके कान पर हल्दी लगाओ और माई मदारन का नाम लेकर पानी के छींटे मारो । (भय, पृ. ४४)
२) बरामदे में रखे लंबे बास को उठाया और तार से पैंट कमीज को नीचे गिरा दिया । (कहॉ जाए सतीश ? पृ. ५०)

सलाम संग्रह में संयुक्त वाक्यों प्रयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है ।

मिश्र वाक्य :

जिस वाक्य में एकाधिक उपवाक्यों का प्रयोग किया गया हो तथा उसमें से एक प्रधान तथा अन्य गौण या आश्रित हो तब उस वाक्य रचना को मिश्र वाक्य कहते है । इसमें प्रधान वाक्य की क्रिया मुख्य होती है । आश्रित उपवाक्यों का आरंभ कि, जो, जिसे, यदि, क्योंकि आदि अव्ययों से होता है । वाल्मीकि ने मिश्र वाक्यों का यथेच्छ प्रयोग किया है —

१) उसे दूर—दूर तक कोई दिखाई नही दे रहा था जिसके सामने मन की गुथियॉ खोल सके ; जिसके कंधे पर सिर रखकर रो सके । (ग्रहण, पृ. ६५)

२) जब गुरुद्वारा बन चूका है, चर्च बननेवाला है तो मंदिर बनाने में क्या अडचन है । (सपना, पृ. २४)

३) जब से मामा ने मॉ के कान फूँके है, वह इसी तरह बात करती है । (भय, पृ. ४२)

विधानवाचक वाक्य :

जिन वाक्यों से किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है, उन्हें विधानवाचक वाकय कहते है —

१) भट्टे की चिमनी धुऑ उगलने लगी थी । (खानाबदोश, पृ. १२३)

२) रमेसर का मन उचट गया था । (बिरम की बहु, पृ. २७)

३) दरवाजे पर किसी ने जोर की दस्तक दी । (कहॉ जाऍ सतीश?, पृ. ४८)

निषेधवाचक वाक्य :

जिन वाक्यों की क्रिया मे नकार या किसी कार्य के निषेध का भाव होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते है । इसमें ऐच्छिक निषेध, अनैच्छिक निषेध या अक्षमता का भाव भी हो सकता है —

१) वह हवेली नही आएगी । (गोहत्या, पृ. ५८)

२) दाम ठीक से लगाओ...इसमें तो पॉच किलो मीट भी नही है । (भय, पृ. ५०)

३) पूरी चिठ्ठी पढ लेने का हौसला उसमें नही बचा था । (अंधड, पृ. ८५)

प्रश्नवाचक वाक्य :

जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाए या कुछ पूछा जाए उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं । प्रश्नवाचक वाकय दो प्रकार के होते है, एक जिसमें प्रश्नवाचक शब्द प्रयुक्त हो — कौन, कहॉ, कैसे, क्या तथा जिनका उत्तर विस्तार से दिया जाता है । दूसरे जिसमें प्रश्न होता है परंतु उच्चारण पध्दति से । दूसरे प्रकार के प्रश्नवाचक वाक्यों के उत्तर सामान्यतय: 'हॉ' या 'ना' में होता है ।

१) पूजा में चढाना है क्या ? (भय, पृ. ३९)

२) तुम लोग कहॉ से आए हो? (कहॉ जाऍ सतीश ? पृ. ५१)

३) देहरादून से तो कल एक बारात भी आई है ? (सलाम, पृ. ११)

आज्ञावाचक वाक्य :

जिन वाक्यों में आज्ञा या अनुमति देने का भाव हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते है—

१) कल उसे हवेली भेज देना । (गोहत्या,पृ. ५८)

२) सॉझ से पहले लौट आइयो । (जिनावर, पृ. ९४)

३) मानो को दफ्तर में बुलाओ । (खानाबदोश, पृ. १२७)

इच्छासूचक वाक्य :

वक्ता की इच्छा, आशा, आकांशा या आशीर्वाद को व्यक्त करने वाले वाक्य इच्छासूचक वाक्य कहलाते हैं—

१) ''बरखुरदार, हौसला रखो....जिस मुकाम पर तुम पहूँचना चाहते हो जरुर पहुँचोगे ।''(कहाँ जाएँ सतीश ?, पृ. ५२)
२) ''तुम्हारे जबान में कीडे पडे ।'' (कुचक्र, पृ. ११)

संकेतवाचक वाक्य :
जिन वाक्यों से एक क्रिया पर दूसरी क्रिया निर्भर होने का बोध होता हो, उन्हें सकेतवाचक वाक्य कहते है—
१) यदि कोई आ गया तो बहुत मुश्किल होगा । (भय, पृ. ४४)
२) आप गंदगी ढोने जाती है.....लोग देखते है तो शर्म आती है । (अम्मा, पृ. १२२)

• संदेहवाचक वाक्य
जिन वाक्यों में कार्य होने के सबंध में संदेह हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं—
१) कही वह भी चुहडा याचमार ही न हो । (कहाँ जाएँ सतीश? पृ. ५३)
२) सुबेसिंह किसी भी समय लौटकर आ सकता है । (खानाबदोश, पृ. १२८)

११)विस्मयादिबोधक वाक्य :
जिन वाक्यों से आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा के भाव व्यक्त होते हो उन्हें विस्मयादिबोधक वाकय कहते है—
१) अब क्या बताए सर ! हर कोई सचिव या कोषाध्यक्ष बनना चाहता है । (सपना, पृ. २२)
२) हाय !इतनी सुंदर और बाँझ.....(ग्रहण, पृ. ६५)

इस प्रकार 'सलाम' संग्रह में विभिन्न प्रकार के वाक्यों का प्रयोग हुआ है । ओमप्रकाश वाल्मीकि भाषा प्रयुक्ति के प्रति सजग और सावधान है ।

लोकोक्ति, मुहावरे, सूक्तियाँ भाषा के प्रभावकारक तत्व है । सूक्ति और लोकोक्ति वाक्य रुप में प्रकट होते है तथा अर्थबोधन में अपने आप में स्वयंपूर्ण होते है । मुहावरे वाक्यांश रुप में होते हैं, लेकिन वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही मुहावरा इच्छित भाषिक अभिव्यक्ति देता है ।

• सूक्तियाँ :
'सूक्ति' का अर्थ है— उचित उक्ति अथवा चमत्कार पूर्ण वाक्य । सूक्तियाँ ऐसे सूंदर अर्थपूर्ण वाक्य होते है, जो समय, समाज और स्थल सापेक्ष होते हुए भी किसी सामान्य प्रवृत्ति को चंद शब्दों के माध्यम से उजागर करते है । लेखक अपने जीवन—अनुभवों का सार सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करता हैं ।'सलाम' संग्रह में प्रयुक्त निम्न सूक्तियों के प्रयोग से भाषा सौदंर्य में अभिवृध्दि हुई है ।

१) मन में गाँठ पड जाए तो खोले नही खुलती । (पृ. ८२)
२) जो भी है सब यही धरा रह जाएगा । साथ कुछ भी न जाएगा । (पृ. १०८)
३) आदमी जब आदमखोर बन जाता है, तो फिर अपना—पराया नही देखता । (पृ. ११९)
४) अपने देस की सूखी रोटी भी परदेस के पकवानों से अच्छी होती है । (पृ. १२४)
५) आदमी की औकात घर से बाहर कदम रखने पे ही पता चलती है । (पृ. १२४)

•लोकोक्तियाँ :
लोकोक्ति का सीधा—सदा अर्थ है — लोक अथवा जनता जनार्धन की उक्ति । हिंदी में लोकोक्ति का पर्यायवाची शब्द कहावत है जिसका संबंध 'कहना' क्रिया से है । ये उक्तियाँ ऐसे वाक्य है जिसके मूल रुप में जीवन के किसी सत्यानुभूति को व्यक्त किया जाता है । ये सत्यान्वेषी उक्तियाँ जब लोक मानस में स्थायी रुप में प्रयुक्त होने लगती है तो उसके प्रयोक्ता उसे स्वयं अपनी ही उक्ति मानने लगता है । ''कहावत वह अनुभव युक्त वाक्य है जो संक्षिप्त, सारगर्भित एवं हृदयस्पर्शी होने के साथ—साथ लोकप्रिय किंवा लोक प्रचलित हो तथा जिसमें किसी अप्रस्तुत कथन का सहारा लेकर प्रस्तुत अर्थ को

प्रकट करने की क्षमता हो ।''[१८] भाषा को सशक्त एवं समृध्द बनाने के लिए कहावतों का प्रयोग आवश्यक है ।

'सलाम' संग्रह में कहावतों का प्रयोग कम हुआ है, लेकिन जहॉ भी प्रयोग किया गया है सटीक प्रयोग किया है । सलाम की भाषा सरल, होने के कारण इसमें कहावतों का अत्यल्प प्रयोग हुआ है । 'सलाम' संग्रह में पाई जाने वाली लोकोक्तियॉ निम्न प्रकार की हैं जो अपनी सहज, स्वाभाविक प्रयुक्ति के कारण भाष को रोचक बनाती है —

१) दूनियॉ का लूट्टो भी और भले भी बणे रहो । (पृ. ११९)
२) सुबह का भूला घर लौटे आवेगा । (पृ. १२१)
३) घर में तो चुहा भी सुरमा बणा रहे है । (पृ. १२४)
४) गॉठ में नही है पैसा, चले हाथी खरीदने । (पृ. १२६)

• मुहावरें :

''मुहावरा'' शब्द अरबी भाषा का है जो 'हौर' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है 'अभ्यास' अथवा 'बातचीत' ।'' [१९] मुहावरा कुछ पदों का समूह होता है जिसका वाच्यार्थ न लेकर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है । वाच्यार्थ से भिन्न लाक्षणिक अर्थ देने वाला वाक्यांश ही मुहावरा कहलाता है । मुहावरें के प्रयोग से भाषा के आकर्षकता, सजीवता, रोचकता तथा कलात्मकता में अभिवृध्दि होती है ।'सलाम' संग्रह में मुहावरों का यथेच्छ प्रयोग किया है ।

रंगे हाथों पकडना (पृ. १७), टस—से—मस न होना (पृ. २४), टॉग अडाना (पृ. २४), पहेलिया बुझाना (पृ. २९), चौपट होना (पृ. ३५), कान फूॅकना (पृ. ४२), मुॅह ताकना (पृ. ५७), चेहरे पर हवाइयॉ उडना (पृ. ६०), सॉप सूॅघना (पृ. ६१), पसीने छूटना (पृ. १११), घूटने टेकना (पृ. ११८), जख्म हरे होना (पृ. १२२), काम से काम रखना (पृ. १३०)

•शब्दगत प्रयोग :

भाषा की लघुत्तम सार्थक इकाई 'शब्द' है । वाकय सार्थक शब्दों का व्यवस्थित क्रम है । लेखक की भाषा प्रयुक्ति अर्थात उसकी शब्द चयन की क्षमता है । शब्द ही भाषा को प्रभावपुर्ण तथा रोचक बनाते है । शब्द ही है जो लेखक के अमूर्त भावों को मूर्त रुप प्रदान करते हैं । 'सलाम' कहानी संग्रह की कहानियों में वाल्मीकि ने आवश्यकता के अनुरुप कई प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है ।

१) तत्सम शब्द :

तत्सम शब्द का अर्थ है— 'तत्सम' उसके समान; अर्थात अपने स्त्रोत संस्कृत के समान । जो शब्द अपनी मूल भाषा से जैसे—के—वैसे बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जाते है; उन शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है । हिंदी भाषा की मूल भाषा संस्कृत है । इस दृष्टि से संस्कृत के जो शब्द अपने मूल रुप में बिना परिवर्तन के हिंदी में आए हैं— तत्सम है । वाल्मीकि ने 'सलाम' संग्रह की कहानियों में तत्सम शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया है ।

प्रकट (१७), ऋषि (२५), ईर्ष्या (६४), चंद्र (६५), सूर्य (६६), शंख (६७), कृतज्ञ (६९), दृष्टि (७५), स्पर्श (७६), संस्कार (८२), मंथन (८६), ध्वनि (९३), प्रतीक्षा (९३), मुद्रा (९७), प्रतिरोध (९९), अभद्र (१०७), प्रस्थान (१०८), दर्शन (१०८), गोधन (३६), क्रूर (४७), सुदर्शन (५२), क्रोध (५७), चंचल (११३), शिवचरण (११८), युध्द (१३०), ब्राम्हण (२९),

तद्भव :

जो शब्द किसी भाषा में उसके मूल भाषा से भाषा विकास की प्रक्रिया में अपने मूल रुप में परिवर्तन हो स्वीकार किए जाते हैं, उन शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं । ये शब्द भाषा विकास प्रक्रिया में अपने मूल रुप से भिन्न रुप में सामने आते हैं । इनका रुप बदलता है अर्थ नहीं ।हिंदी भाषा की मूल भाषा संस्कृत है । संस्कृत से हिंदी के विकास की स्थिति संस्कृत—पालि—प्राकृत—अपभ्रंश — हिंदी इस प्रकार है । इस प्रक्रिया में संस्कृत का शब्द रुप बदल कर हिंदी में आए तो वह हिंदी का तद्भव शब्द होगा । 'सलाम' कहानी संग्रह में प्रयुक्त तद्भव शब्द निम्न प्रकार—

काम (१२), डंडा (१३), सूरज (१६), नाक (१८), कुँआ (३२), उँगली (३४), आगे (३७), कान (४२), दाँत (४६), आँख (५१), रात (५३), मुँह (५७), आग (६२), बहु (६४), ब्याह (६४), चाँद (६६), हाथ (७२), गाँव (७८), किवाड (९०), अम्मा (११३), नाच (११६), महीना (१२४) आदि ।

देशज शब्द :

देशज शब्द उन शब्दों को कहा जाता है जो देश के जन—जातियों या ग्राम क्षेत्रों के अपने शब्द होते है । ये शब्द किसी भाषा के अपने मूल शब्द होते है जिनकी संख्या अत्यल्प होती है ।वाल्मीकि की कहानियाँ दलित समाज के जीवन दशाओं से संबंधित है । उनकी भाषा मानक भाषा से भिन्न है तथा उनका अपना एक लहजा है । इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग उनकी रचनाओं में पात्रों के वक्तव्यों, निश्चित स्थिति सूचकता तथा वस्तू निर्धारण में हुआ है —

खंडजे (१०), जोहड (१७), जातक (१८), लौंडिया (१८), गोड्डे (३३), तीज (६६), जेवडी (७५), गुंबज (७७), अधंड (८४), ओक (९८), डोल (९८), खसम (९९), लोटा (९८), झाडू (११४), टट्टी (११४), पेट (६६), खिडकी (१०९),

विदेशी शब्द :

भारतीय भाषाओं से भिन्न अन्य भाषाओं से जो शब्द आए हुए है उन शब्दों को विदेशी शब्द कहा गया है । भारतीयों का संबंध प्राचीन काल से ही विदेशियों से रहा है । उनकी भाषा, रहन—सहन संस्कार तथा व्यवहारों का प्रभाव भारतीय भाषाओं में आए उन शब्दों को ही विदेशी शब्द कहा गया । भारतीय परिवेश और भाषा का संबंध मुख्यत: अरबी—फारसी और अंग्रेजी से रहा । दोनों ही भाषिकों का लंबे समय तक भारत पर शासन रहा । उनकी भाषा उस काल की राजकाज की भाषा रही और लोगों को उस भाषा में व्यवहार करने पडे । राजकाज की भाषा होने के कारण इन भाषाओं से कई शब्द भारतीय भाषाओं में आए । वाल्मीकि ने अपने संग्रह 'सलाम' में इन शब्दों का प्रचूर प्रयोग किया है । पात्रों की शैक्षिक स्थिति, स्थान (नगर—देहात) तथा विषय की आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मुख्यत: सपना, कुचक्र तथा अंधड कहानियों में हुआ है; इसके बावजूद अन्य कहानियों में भी अंग्रेजी शब्दों की भरमार है ।

अंग्रेजी शब्द

बॅलिस्टर (१८), क्लब (२०), स्कूल (२०), हाइवे (२०), गॉड फियरिंग (२३), एलीमेंट (२४), केबिन (२४), वर्कर (२५), टीम (२५), गेट (२७), फंक्शन (२६), मिस्टर (२९), डॉक्टर (३६), प्लैट (४७), फैक्टरी (५४), रिटायर (५४), कंडक्टर (७८), सप्लाई (८७), कॉलेज (९०), सैंडिल (९७), रिपोर्ट (१०३), सेक्शन (१०४) क्वार्टर (११२), ट्रेनिंग (११४), ट्रांजिस्टर (१२५), हॅडपंप (१२८)

अबरी—फारसी के शब्दों का प्रयोग भी संग्रह की कहानियों में यंज—तंज दिखाई देता है । इसके बावजूद हिंदी की सहजता और स्वाभाविकता बरकरार है । इन शब्दों का संबंध भारतीय भाषाओं से कई शताब्दियों का होने के कारण ये शब्द भारतीय भाषाओं में रच—पच गए है ।

अरबी— फारसी शब्द :

खामोशी (१०), इनकार (१६), साजिश (१६), इत्मिनान (२८), खाल (३२), खुन (३७), औकात (५९), कौशिश (५९), गिरफ्त (६८), इबारत (७५), हरफ (८०), ताज्जुब (८६), इजाजत (८७), इंतजाम (८७), तरक्की (८८), फूर्सत (८८), बर्दाश्त (९१), तनख्वाह (९१), वजूद (९३), निगाहें (९६), खरगोश (९६), जिक्र (१०१) वाकिफ (११०), बाकायदा (११४), मुआयना (१२३), आदि ।

• युग्मक शब्द :

'युग्म' से तात्पर्य दो शब्दों के योग से है । अर्थात जब भाषा में शब्दों का प्रयोग मिले—जूले रुप में होने लगता है, तब उस शब्द प्रयोग को युग्मक शब्द कहा जाता है । यह शब्द प्रयोग पर्यायवाची, विलोमी, सार्थक — निरर्थक, संख्यावाचक आदि किसी भी प्रकार का हो सकता है । इन शब्दों के

उच्चारण में बहुत हद तक समानता या ध्वन्यात्मकता होती है । यह शब्द आदत के कारण सहजता से उच्चारित किए जाते है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने भाषा की सहजता, स्वाभाविकता को अक्षुण्ण रखते हुए युग्मक शब्दों का प्रयोग किया है । इन शब्द प्रयोग के कारण भाषा अकृत्रिम, सजीव, सहजग्राह्य एवं प्रभावपूर्ण बनी है । सलाम की भाषा में युग्मक शब्दों के सभी प्रकार पाए जाते है ।

पर्यायवाची युग्म

इस शब्द युग्म के दोनों शब्द सार्थक होते हुए एक–दुसरे के पर्याय होते है या एक ही क्रिया से संबंधित होते है–

नई–नवेली (१६), डरा–धमका (१८), जोर–शोर (२३), रंग–ढंग (२३), पढने–लिखने (४९), घर–आँगन (४४), चलना–फिरना (५२), रुप–रंग (५८), नेम– व्रत (६४), तीज–त्योहार (६६), लाड–प्यार (७१), सोचने – समझने (७२), सोच–विचार (७४), सुख–चैन (७५), दुबला–पतला (७८), विचार–मंथन (८६), दुनिया –जहान (९६), चिखना–चिल्लाना (११२), गॉव–देहात (१२४),

विलोमी युग्म :

इस प्रकार के शब्द युग्म में प्रयुक्त शब्द परस्पर विरोधी अर्थ के होते है । यहॉ शब्द विलोमी होने के बावजूद अर्थ बोधन में यह युग्म अपने विलोमी अर्थ को त्याग विशिष्ट अर्थ सुचक बनते है ।

ऊँच–नीच (१६), जीना– मरना (१८), रात–दिन (२५), उत्तर– दक्षिण (२६), इधर–उधर (२७), आना–जाना (४५), छोटे–मोटे (४८), अच्छे–बुरे (५८), कच्चे–पक्के (६३), थोडा–बहुत (६७), विपन्नता–संपन्नता (७८), सोते–जागते (८२), दिन–रात (१०८), बखत–कुबखत (११७), सुबह–शाम (१२५),

सार्थक–निरर्थक युग्म :

ये युग्म सार्थक – निरर्थक के युग्म से बनते है । इसमें ध्वनि साम्यता के आधार पर सार्थक शब्द का समुच्चारित निरर्थक शब्द बनता है । सार्थक शब्द के साथ जुडकर निरर्थक शब्द भी सार्थक बनता है–

अलग–थलग (१६), शोर–शराबा (३१), नामी–गिरामी (३३), नंग–धडग (३६), गोल –मटोल (३९), बचे–खुचे (३९), इर्द–गिर्द (४४), गाली–गलौज (४५), जीर्ण–शीर्ण (५२), लाड–चाव (६४), उमड–घुमड (६५), ठीक–ठाक (६६), जात–पात (७०), मुडी–तुडी (७६), सुध–बुध (७७),

• संख्यावाचक युग्म

ये शब्द संख्यावाचक शब्दों के योग से बनते है । इनका प्रयोग परिणाम, समय, संख्या के संबंध में जानकारी देने के लिए किया जाता है –

इक्का–दुक्का (२१), दो–तीन (२८), सौ–सौ (३०), तीन–तीन (३२), एक–दूसरे (४०), एक–आध (४३), आठ–दस (६०), डेढ–दो (६७), ढाई–तीन (७२), दस–पंद्रह (७३), पंद्रह–बीस (७६), तीस–चालीस (८३), बारह–एक (८५), दस–साढे दस (१२१)

• पुनरुक्त शब्द :

इस शब्द युग्म में एक ही शब्द का दोबारा उच्चारण होता है । शब्द की पुनरावृत्ति होने के कारण इसे पुनरुक्त शब्द कहा जाता है । किसी भाव या विचार पर बल देने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है । वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में इन शब्दों का यथोचित प्रयोग किया है–

चिंदी–चिंदी (१६), लाल–लाल (२१), धीरे–धीरे (२४), बडे–बडे (२६), पीछे–पीछे (३४), दूर–दूर (३७), छोटे–छोटे (३९), घुटी–घुटी (४३), कई–कई (४८), बहुत–बहुत (५१), बारी–बारी (६१), टुकडे–टुकडे (६५), सदा–सदा (७३), धीमे–धीमे (७७), लंबे–लंबे (७९), मन–मन (९८), सीधे–सीधे (१०३), रेशा–रेशा (११२), समझा–समझा (११६), नस–नस (१२५)

• ध्वन्यात्मक शब्द :

ध्वन्यात्मक शब्दों को अनुकरणात्मक शब्द भी कहते है । इन शब्दों का निर्माण किसी ध्वनि विशेष के अनुकरण के आधार पर किया जाता है । इन शब्दों के उच्चारण और अर्थ में बहुत अंतर नही होता । प्रकृति के तेवर, कहानियों के पात्रों की मनोदशा, पशु–पक्षियों का स्वर आदि को यथातथ्य रुप में अंकित करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।'सलाम' संग्रह में ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग वातावरण निर्मिति तथा विषय की प्रामाणिकता को बढाने के लिए किया गया है ।

भिनभिनाना (११), रंभाना (३६), भडभड (४८), खटखटाना (४८), खटर–पटर (५२), घर्र–घर्र (४७), सॉय–सॉय (६९), चीं–चहट (८८), सडाक–सडाक (११६), चिर–चिर (१२३), झीन–झीन (१२६)

गालियों का प्रयोग :

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलितों की स्थिति को यथातथ्य अपनी कहानियों में चित्रित करते हैं । वहॉ की स्थिति में अभाव है, गंदगी है, गाली है । इन सब को वाल्मीकि ने निहायत असली रुप में अपनी कहानियों में स्थान दिया है । इन गालियों के कारण पात्रों की मनोदशा, उनका स्तर, बोलने का तरीका स्पष्ट हो जाता है । इन शब्दों के प्रयोग से रचना में स्वाभाविकता का संचार हुआ है । ये शब्द निम्न प्रकार –

चूतिया (१२), कंजडों (१४), भोसड के (३३), हारामियों (५८), नासपीट्टे (६४), कमीने (७३), हरामजादे (७३), साले (८२), जाहिल (१०५), मूर्ख (१०५), चोट्टे (११६), कुत्ते (११६), छिनाल (११६), करमजली (११७),

इसके साथ ही कुछ शब्द प्रयोगों का गालीनुमा प्रयोग किया है–

१) अरे, ओ थाली के बैंगन (पृ. ३०)

२) गॉड में डंडा डाल के उलट दूँगा । (पृ. १३)

३) अपने मॉ के यार कू ट्टटी में घसीट लेती । (पृ. ११६)

४).....तू उसका खसम है.....या उसकी (.....) पर चर्बी चढ गई है (पृ. १२८)

इस प्रकार पात्रों द्वारा सहजता से उपरोक्त गालियों का प्रयोग किया है । ये पात्र आम बोलचाल में सहजता से इन गालियों का प्रयोग करते है ।

• अशुध्द शब्द प्रयोग :

वाल्मीकि के दलित पात्र अज्ञानी, अशिक्षित है तथा उनकी विशिष्ट बोली और विशिष्ट लहजा है । उन पात्रों के कथनों में मानक शब्दों के अशुध्द प्रयोग पाए जाते है । अशुध्द प्रयोग एक दोष माना जाता है लेकिन सलाम की कहानियों में इन शब्दों का इतना सटीक प्रयोग हुआ है कि विशेषता बन गए है । पात्रों की उच्चारण शैली तथा उनकी बोली का प्रभाव निम्न शब्दों से साफ दिखाई देता है –

इब (अब १७), बालिस्टर (बॅलिस्टर, १८), बाट (राह, ४१), गिया (गया, ४१), अच्छर (अक्षर, ४९), पंडत (पंडित, ५८), निरदोस (निर्दोष, ६१), साद्दी (शादी, ६४), लिकडरा (निकल रहा, ६७), बी (भी, ७१) लच्छन (लक्षण, ७५), सिंभाल (संभाल, ८३), इराम (आराम ९८), किलारक (क्लार्क११८)

• शैलीगत प्रयोग :

'शैली' से तात्पर्य 'अभिव्यक्ति की विशिष्ट पध्दति' से है । भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है तो शैली उसे रोचकता तथा कलात्मक रुप में प्रस्तुत करने का ढंग है। 'शैली के लिए हिंदी शब्दकोशों में चाल, ढंग, तर्ज, प्रणाली, तरीका, रीति, प्रथा, रस्म, रिवाज, वाक्य रचना का प्रकार आदि पर्याय दिए गए है ।''[२०] इस प्रकार शैली किसी लेखक, कवि की विशिष्ट कथन प्रणाली है ।

हिंदी भाषा में शैली शब्द अंग्रेजी शब्द 'स्टाइल' के पर्याय के रुप में प्रचलित है । पुरानी फ्रांसीसी और मध्यकालीन अंग्रेजी में इसका अभिप्राय किसी लेखक की विशेषता को अभिव्यक्त करने वाली पध्दति के रुप में लिया गया है ।[२१] ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा 'सलाम' संग्रह की कहानियों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है । इतना ही नही, उनकी एक–एक कहानी में एकाधिक शैली प्रकारों का प्रयोग हुआ है । उनके 'जिनावर'कहानी में वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, पूर्वदीप्ति शैली, व्यंग्यात्मक

शैली तथा किस्सागोई शैली का प्रयोग किया गया है । वाल्मीकि द्वारा प्रयुक्त विभिन्न शैलियों के कारण कहानियॉ रोचक, आकर्षक तथा कलात्मक बनी है ।

• वर्णनात्मक शैली :

कहानी साहित्य में वर्णनात्मक शैली सर्वाधिक प्रचलित शैली है । इसमें रचनाकार एक तटस्थ दृष्टा के समान घटनाओं, पात्रों की मनस्थितियों का वर्णन करता है । इस शैली में स्थित विवेचन, चरित्र–चित्रण घटना वर्णन आदि शुरु से अंत तक शब्दों के माध्यम से सूक्ष्मता से वर्णित होता है । इस शैली में कहानी के सभी मूल उपकरणों के विकास की संभावना होती है । यह शैली अत्यंत सरल, सुगठित एवं बोधगम्य होने के कारण अधिकतर रचनाकारों द्वारा अपनाई गई है ।'सलाम' की सपना, ग्रहण, खानाबदोश, अम्मा तथा अन्य कहानियों में इस शैली को कमोबेश अपनाया गया है । 'सपना' कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है– ''.....चैक पोस्ट के पास ही एक और श्मशान के लिए भूमि आरक्षित की गई थी, दूसरी और एक खूबसूरत बगीचा बनाया गया था, नहरे और फव्वारे थे, फलों के वृक्ष थे, किसिम–किसिम के फूल थे । घास थी । चिडियाघर था । एक छोटा–सा संग्रहालय भी था । बच्चों के खेलने की तमाम चीजे थी । यानी कुल मिलाकर एक आकर्षक पिकनिक स्थल बनाया गया था ।''[२]

• विश्लेषणात्मक शैली :

विश्लेषणात्मक शैली तर्क प्रधान होती है । इसमें कहानी में प्रयुक्त किसी घटना, पात्र, संवाद, वातावरण का विवेचन किया जाता है । यह विवेचन बाहरी या उपरी होते हुए भी इस शैली के द्वारा पाठक कृति के अंतरात्मा तक पहुँच पाता है । इस शैली मे विवेचन की प्रमुखता होने के कारण इसे विवेचनात्मक शैली भी कहा जाता है । इस शैली का प्रयोग वाल्मीकि ने 'बैल की खाल' कहानी में किया है । इसके अतिरिक्त कहॉ जाए सतीश? पच्चीस चौका डेढ सौ,कुचक्र तथा अम्मा आदि कहानियों में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है – ''उनके चेहरे बुझे हुए थे और ऑखे गड्ढो में धॅसी हुई थी । सख्त हाथों की हथेलियॉ चौडी और मासविहीन थी । जिससे हाथों की नसें और अधिक उभरी हुई दिखाई पडती थी । दोनों ने घुटनों तक मटमैली सफेद धोती का टुकडा लपेट रखा था । कमर से उपर कमीज की जगह पुराने किस्म की बंडीनुमा चीकट बनियन पहन रखी थी । जिसमें जगह–जगह छेद हो गए थे ।''[२२]

• भावात्मक शैली :

भावात्मक शैली में नाम के समान ही भाव–सत्य की अभिव्यक्ति होती है । साहित्य मानवी संवेदनाओं को जिवंत रखने का काम करता है । लेखक अपने विशिष्ट अनुभवों को जो उसका भावसत्य है, पाठकों के सामने उसी संवेदना के साथ रखना चाहता है जिस तीव्रता से उसने भोगा है । ऐसी स्थिति में वह भावात्मक शैली को अपनाता है । 'अम्मा' कहानी की अम्मा जब बेटे बिशन को अपने बुढापे में काम करने का कारण बताती है तब ऑखे नम हुए बिना नही रह पाती – ''तेरे बापू रिटायर हुए तो जो पैसे मिले थे उनसे सरदार का कर्जा उतार दिया । इब तो जिंदगानी थारे ही भरोसे है.... जिब किरणलता अपने जातकों कू लेके आवे है तो उसके खाली हाथ पे कुछ रखने के लिए तो मेरे पास कुछ होना चाहिए । कब तक तेरे से मॉगूगी...ना बेटे....उस सुख की खातीर मुझे काम करना पड रहा है तो आखरी सॉस तक करुँगी ।''[२४]

• आत्मकथनात्मक शैली :

कहानी में जब लेखक स्वयं पात्र रुप मं अपनी कथा कहता है तब उस शैली विशेष को आत्मकथनात्मक शैली कहा जाता है । इस शैली में लेखक स्वयं 'मै' रुप में उपस्थित होता है । इसमें लेखक के अनुभव 'मै' के माध्यम से अभिव्यक्त होते है जो पाठक से सीधा संपर्क स्थापित कर अपनी प्रामाणिकता और विश्वसनीयता बनाए रखते है । इस शैली के साथ पाठक सहजता से तादात्मय स्थापित कर पात्र और घटना से गहरे जुड जाता है ।

'सलाम' संग्रह में जिनावर, कहॉ जाए सतीश?, सलाम आदि काहनियों में इस शैली का प्रयोग हुआ है । 'कहॉ जाए सतीश?'

''.....मै इस भंगीपन से छुटकारा पाना चाहता हूँ साहाब । मैने उन्हें धोखा नही दिया साहब.....रवि शर्मा मास्साब को मैने सब कुछ बता दिया था । पंत जी ने कभी पूछा नही तो क्या बताता ?.....मेरी परीक्षाएँ पास है.....मुझे रहने की जगह चाहिए । साहब क्या मै सिर्फ कर्मचारी ही बनने के लिए पैदा हुआ हूँ । मै कुछ और करना चाहता हूँ ....''[२५]

• यथार्थ शैली :

समाज में जो जैसा है उसका उसी रुप में तटस्थता से किया गया चित्रण ही यथार्थ है । साहित्य की यह एक विशिष्ट चिंतन पध्दति है जिसमें रचनाकार अपने समय और समाज में व्याप्त विद्रुपताएँ, अंधविश्वास, अनर्गल परंपराएँ, विच्छिन्न मानवीय संबंध आदि को चित्रित करता है । इस शैली की विशेषता है — तथ्यता । इसमें तथ्य और घटनाएँ इतनी प्रमाणिक होती है कि पाठक सहजता से उनसे रु—ब—रु होता है ।

यथार्थ चित्रण दलित साहित्य की विशेषता है । ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित लेखक है । उनकी सभी कहानियों में यथार्थ शैली का प्रयोग हुआ है । वाल्मीकि ने दलित समाज के यथार्थ स्थिति के सुक्ष्म—से—सुक्ष्म चित्र अंकित किए है । इसमें पात्रों की विशिष्ट मानसिकता, वातावरण, सुख—दुख से लेकर उनके शोषण—उत्पीडन, अशिक्षा, निष्कपटता तथा बेचारगी को यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है । उनका यथार्थ इतना विद्रुप है कि उसे देखना, महसूस करना एक त्रासद अनुभव है । इस शैली की प्रमुख कहानिॉ है —खानाबदोश, जिनावर, पच्चीस चौका डेढ सौ । 'खानाबदोश' कहानी में भट्टा मजदूरों की यथार्थ स्थिति का चित्रण हुआ है —

''भट्टे पर दवा—दारु का कोई इंतजाम नही था । कटने—फटने पर मिट्टी लगा देना था । कपडा जलाकर राख भर देना ही दवाई की जगह काम आते थे ।''

''बस अड्डे के नाम पर दो—एक दुकाने पान—बीडी की, एक पेड के तने से टिकी पुरानी—स ीमेज पर बदरंग आईना रखकर बैठा गॉव का ही बदरु नाई । नाई से थोडा हटकर दूसरे पेड तले गॉव का मोची, एक केले—अमरुद वाला । बस यही था बस अड्डा ।''[२६]

• संवादात्मक शैली :

संवादात्मक से तात्पर्य—वार्तालाप या कथोपकथन से है । इस शैली द्वारा पाठक पात्रों के विचारों, मनस्थिति, घुटन तथा कहानी के घटनाओं से सहज परिचित होता है । संवादात्मकता के कारण कहानी में नाटकीयता, सजीवता और व्यंजकता का समावेश होता है । इस शैली को नाटकीय शैली भी कहा जाता है ।'सलाम' संग्रह में पर प्रयुक्त संवादात्मक शैली के कारण कहानियॉ अधिक मुखर और संजिदा बनी है । खानाबदोश, सलाम, कुचक्र, सपना, जिनावर आदि काहनियों में इस शैली का प्रयोग हुआ है । 'सपना' कहानी के निम्न संवाद वाल्मीकि के सवांद कौशल और भाषिक सजगता का परिचय देते है—

''बात क्या है ? कुछ कहो तो ।'' ऋषि ने पूछा ।
''ऋषि तुम तो समझदार और पढे—लिखे आदमी हो.....वह गौतम वहॉ बैठा है । सबके आगे ।'' नटराजन ने धीमे स्वर में कहा ।
''तो?''
''तो क्या ? उसे और उसके बच्चो को उठाकर पीछे बैठाओ..''
''लेकिन क्यों?''
''अब तुम्हें कैसे समझाऊँ ऋषि.....तुम तो जान बुझकर नासमझ बनने का नाटक कर रहे हो ?'' नटराजन ने क्षोभ व्यक्त किया ।''[२८]

• व्यंगात्मक शैली :

व्यंग एक चोट है । यह चोट जिस पर पडती है वह गहरे तक तिलमिलाता है परंतु चेहरे पर इसके नामोनिशान नही आने देता बल्कि उसे मुस्कराना पडता है । यह दोहरी चोट है एक तो मार भी खाओ और मुस्कराओ । इस शैली से ध्वनित होने वाला अर्थ साधारण अर्थ से भिन्न एक विशिष्ट अर्थ होता है जो गूढ एवं सरगर्भित होता है । व्यंग शैली का प्रयोग मानव समाज मे व्याप्त विसंगतियों,

विकृतियों, भ्रष्टाचार, शोषण आदि में उचित सुधार लाने के लिए किया जाता है ।'सलाम' संग्रह की कहानियों में व्यंग शैली का प्रयोग समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रुढि—परंपराओं के प्रति आसक्ति, छुआ—छूत, शोषण, सांप्रदायिकता तथा सवर्णो की साजिशों को उद्‌घाटित करने के लिए किया गया है । यहॉ 'कुचक्र' कहानी के आर बी. का कथन दृष्टव्य है —

''हॉ, मि. निशिकांत मेरी गाली तुम्हे अशोभनीय लगती है .....और जो गालियॉ कल तुम शर्मा जी के सामने खडे होकर दे रहे थे....वे जायज थी । सत्यम शिवम सुंदरम थी ।''[२९]

• रेखाचित्रात्मक शैली :

इस शैली के द्वारा किसी पात्र का शब्द चित्र अंकित किया जाता है । इस शैली में रचनाकार पात्र का रुप—रंग, आकृति—प्रकृति, चाल—चलन, वेश—भूषा, बोल—चाल का तरीका आदि सभी को चित्रित करता है । इस शैली से पात्र का संपूर्ण व्यक्तित्व उभरता है । जिससें पात्रों की प्रामाणिकता बढती है ।

संग्रह की अम्मा, बैली की खाल, सपना आदि कहानियों में रेखाचित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है । 'अम्मा' कहानी की अम्मा का चित्रण निम्न प्रकार किया है—

''....सण जैसे रुखे बाल, झुर्रियों से भरा चेहरा, मिचमिची ऑखों वाली अम्मा,वक्त की मार ने जिसकी एक ऑख को छोटा कर दिया है । और जिसके सामने के दॉत टूटे हुए है । जो एक —आध बचा है, वह भी भडभूजे की कढाई में उछलते मकई के दानों की तरह हिलता है ।''[२७]

• पूर्वदीप्ति शैली :

इस शैली में पात्रों के स्मृति से जुडकर विस्मृत क्षण वर्तमान पटल पर आ जाते है । पात्र वर्तमान की घटनाओं के साथ जुडा होता है लेकिन वर्तमान की ऐसी घटना का सबंध अतीत की किसी घटना से होता है । ऐसी स्थिति में अतीत की घटना का पात्रों की स्मृति के रुप में सामने आना ही पूर्वदीप्ति है । तथा ऐसी घटनाओं जिस शैली के माध्यम से व्यक्त किया जाता है वह 'पूर्वदीप्ति शैली' कहलाती है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने सलाम, जिनावर, अम्म अधंड आदि कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है । 'सलाम' कहानी में कमल के मन में गत जीवन की घटना का साकार होना निम्न रुप में चित्रित है—

''उसके जेहन में पंद्रह वर्ष पुरानी घटना दस्तक देने लगी । जिसकी स्मृति मात्र से ही उसके शरीर में एक लहर—सी दौड गई ।

उस रोज कमल हरीश को पहली बार स्कूल से सीधा अपने घर ले गया था । पिताजी कहीं बाहर गए थे ।''[२८]

• तर्क शैली :

इस शैली में तर्को की प्रधानता होती है । किसी बात को न करने के लिए, करने के लिए या अपनी बात को स्थापित करने के लिए तर्क देना ही तर्क शैली है । इसमें प्रधान तथ्य तर्क है । वह उचित हो सकता है और अनुचित भी । बस इस शैली में अपनी बात रखने के लिए तर्क का सहारा लिया जाता है ।'सलाम' संग्रह की कहानियों में जो कहानियॉ शिक्षित दलितों से संबंधित है उनमें तर्क शैली का प्रयोग अधिक हुआ है—कुचक्र, अंधड, सलाम आदि । अंधड कहानी में. मि. लाल अपनी जाति छिपाने तथा दलितों के विकास न होने के संदर्भ में निम्न तर्क देता है —

''ये अपनी हालात के जिम्मेदार स्वंय है । दोष दूसरों को देते है । सरकार ने आरक्षण की बैसाखी देकर उन्हें और भी निकम्मा बना दिया है । हमसे तो कोई भेदभाव नही रखता । सब के साथ घुल —मिलकर रहते है....दस लोग इज्जत भी करते है...''[२९]

ओमप्रकाश वाल्मीकि कहानी के कथ्य के अनुरुप शैली तथा भाषा प्रयोग में सिध्दहस्त है । भाषिक विविधता में वे इतने सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय देते है कि देहाती, नगरीय तथा महानगरीय पात्रां की भाषा में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है । पात्रों के भाषा व्यवहार पर उनका पूर्ण नियत्रंण है । लोकोक्ति, मुहावरें, सुक्तियों, पात्रों के विशिष्ट लहजे तथा भाषिक रुपाधिक्यता ने भाषिक कलात्मकता का परिचय दिया हैं ।

देहाती पात्रों द्वारा प्रयुक्त गालियाँ, शिक्षित पात्रों की भाषा में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द, घटना वर्णन की सूक्ष्मता तथा पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण ने कहानियों को विशिष्टता प्रदान की है । कहानी की आम बोलचाल की भाषा पाठकों से सहज संपर्क स्थापित करती है । चरित्र–चित्रण व घटना वर्णन इतना सटीक है कि दृश्यों का आभास होने लगता है । संवादों, अलंकारों तथा लाक्षणिक प्रयोगों से भाषिक सौंदर्य में अभिवृदधि हुई है ।

संदर्भ :

१) हिंदी कहानियों की शिल्पविधि का विकास — डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. २
२) नाटय विमर्श —नरनारायण राय पृ. १३
३) कहानी : प्रवृत्ति और विश्लेषण — डॉ. सुरेन्द्र उपाध्याय, पृ. ३१०
४) साठोत्तरी हिंदी साहित्य का परिप्रेक्ष्य — डॉ. हरदयाल, पृ. ४०
५) सलाम — ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. ५५
६) वही, पृ. १३
७) वही, पृ. ८६
८) वही पृ. ९१
९) वही पृ. ९१
१०) वही पृ. ६७
११)वही पृ. १२७, १२८
१२) वही पृ. ५८
१३) वही पृ. १२५
१४) वही पृ. ३५
१५) वही पृ. ९९
१६) वही पृ. ६९
१७) भाषा विज्ञान — भोलानाथ तिवारी, पृ. २
१८) हिंदी भाषा व्याकरण और रचना — डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ. ३१६
१९) वही पृ. ३१५
२०) संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर —संपा. नागरी प्रचारिणी सभा, पृ. ७५५, ७५६
२१) शैली और शैली विश्लेषण — पांडेय शशिभूषण 'शीतांशू' पृ. २४
२२) सलाम — ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. २०, २१
२३) वही पृ. ३३
२४) वही पृ. १२२
२५) वही पृ. ५५
२६) वही पृ. १२८
२७) वही पृ. ८२
२८) वही पृ. २९
२९) वही पृ. १०६